

बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – चतुर्थ

दिनांक -01-08-2020

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज लिंग के भेद के बारे में अध्ययन करेंगे।

लिंग के भेद

सारी सृष्टि की तीन मुख्य जातियाँ हैं- (1) पुरुष (2) स्त्री और (3) जड़। अनेक भाषाओं में इन्हीं तीन जातियों के आधार पर लिंग के तीन भेद किये गये हैं- (1) पुल्लिंग (2) स्त्रीलिंग और (3) नपुंसकलिंग।

अँगरेजी व्याकरण में लिंग का निर्णय इसी व्यवस्था के अनुसार होता है। मराठी, गुजराती आदि आधुनिक आर्यभाषाओं में भी यह व्यवस्था ज्यों-की-त्यों चली आ रही है।

इसके विपरीत, हिन्दी में दो ही लिंग- पुल्लिंग और स्त्रीलिंग- हैं। नपुंसकलिंग यहाँ नहीं हैं। अतः, हिन्दी में सारे पदार्थवाचक शब्द, चाहे वे चेतन हों या जड़, स्त्रीलिंग और पुल्लिंग , इन दो लिंगों में विभक्त है।

हिन्दी व्याकरण में लिंग के दो भेद होते हैं-

(1)पुल्लिंग

(2)स्त्रीलिंग

(1) पुल्लिंग :- जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे-

सजीव- कुत्ता, बालक, खटमल, पिता, राजा, घोड़ा, बन्दर, हंस, बकरा, लड़का इत्यादि।

निर्जीव पदार्थ- मकान, फूल, नाटक, लोहा, चश्मा इत्यादि।

भाव- दुःख, लगाव, इत्यादि।

(2)स्त्रीलिंग :- जिस संज्ञा शब्द से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

जैसे-

सजीव- माता, रानी, घोड़ी, कुतिया, बंदरिया, हंसिनी, लड़की, बकरी,जूँ।

निर्जीव पदार्थ- सूई, कुर्सी, गर्दन इत्यादि।

भाव- लज्जा, बनावट इत्यादि।

गृहकार्य

(1) लिंग किसे कहते हैं?

(2) लिंग के कितने भेद होते हैं?

(3) स्त्रीलिंग के परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।